13.08.2020
12.08.2020.

B.A. - Part - I.
Economics - Paper - I.
National Income - III
"Macro Economics"

Dr. Bipin Kumar
Professor, Deptt. of Economics,
R.R.S. College, Mokama
PPU, Patna.

प्रश्न: राष्ट्रीय आय की प्रमुख विधियों का वर्णन करें।
Analyse important methods of National Income.

Ans: राष्ट्रीय आय को मापने की कई तरीके या विधियाँ हैं, जिनमें प्रमुख निम्नलिखित हैं:

(1) उत्पादन गणना प्रणाली (Production Method): इस विधि को दूसरे नाम अर्थात् 'औद्योगिक उद्गम प्रणाली' या 'सूची गणना' (Inventory method) भी कहते हैं। इस विधि के अनुसार, किसी भी अर्थव्यवस्था में एक वर्ष में वस्तुओं एवं सेवाओं का जो उत्पादन होता है, उसके कुल मूल्य को जोड़ देते हैं। जोड़ में दोहरी गणना की समस्या से बचने के लिए केवल अन्तिम वस्तुओं और सेवाओं को ही शामिल किया जाता है।

इस विधि को अपनाने में सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि देश में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य संबंधी सही संख्या (समंक) (Data) उपलब्ध नहीं होता और इसमें यह पता लगाना भी कठिन हो जाता है कि जिस वस्तु की गणना की जानी है वह वस्तु मध्यवर्ती वस्तु है या अन्तिम वस्तु।

(2) आय की गणना प्रणाली (Income method): इस प्रणाली के अन्तर्गत देश में विभिन्न वर्गों की अर्जित आय को जोड़ दिया जाता है। उत्पत्ति के विभिन्न साधनों के द्वारा उपलब्ध शुद्ध आय की गणना कर ली जाती है। इस प्रणाली (विधि) में देश के सभी नागरिकों की आय का योग किया जाता है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित भुगतानों के योग को 'राष्ट्रीय आय' कहा जाता है।

(i) मजदूरी एवं पारिश्रमिक
(ii) स्वयुक्त (स्वअर्जित आय) (Self-Employed Income).
(iii) लाभांश
(iv) ब्याज (Interest)
(v) लगान और किराया
(vi) सरकारी उद्यमों के लाभ
(vii) अतिरिक्त लाभ.
(viii) कर्मचारियों के कल्याण के लिए अंशदान.
(ix) विदेशों से साधनों की शुद्ध आय.

(3) व्यय की गणना प्रणाली (Expenditure or outlay method): इस प्रणाली में हम एक वर्ष में अर्थव्यवस्था में होनेवाले व्यय के कुल प्रवाह का योग करते हैं। इस विधि के अनुसार, Total Expenditure = Total personal consumption Expenditure + Gross Domestic Private investment + Government Purchases of Goods and Services + Net Foreign Investment (Export value − Import value).

(4) सामाजिक लेखांकन प्रणाली (Social Accounting method): इस विधि के अनुसार,

सम्पूर्ण समाज में लेन-देन करने वालों को विभिन्न वर्गों में बाँटा जाता है। यह वर्ग व्यापारी, उत्पादक, अन्तिम उपभोक्ता आदि के रूप में होता है। इस विधि का प्रतिपादन आर्थिक मंदी के बाद अनेक प्रसिद्ध अर्थशास्त्रियों के द्वारा किया गया और यह विधि राष्ट्रीय आय गणना की नवीनतम विधि मानी जाती है। हैरल्ड ई. डी. एवं रेलन पी. कोक के अनुसार, "सामाजिक लेखांकन मनुष्यों तथा मानवीय संस्थाओं को भली-भाँति समझने में सहायक होता है। इसमें केवल आर्थिक क्रियाओं का वर्गीकरण ही नहीं वरन् अर्थतंत्र (अर्थव्यवस्था) के संचालन की जाँच में एकत्रित सूचनाओं के प्रयोग का भी समावेश होता है।" इस विधि का प्रयोग सामान्यतया, विकसित देशों के द्वारा किया जाता है।

अब हम राष्ट्रीय आय की गणना संबंधी कठिनाइयों (Different Difficulties in the measurement of National Income): उपरोक्त राष्ट्रीय आय की गणना करने में अनेकों कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिनमें से प्रमुख निम्नांकित हैं:

① विश्वसनीय समंकों का अभाव (Lack of Reliable statistics): भारत जैसे विकासशील देश में विश्वसनीय समंकों का अभाव राष्ट्रीय आय की गणना में कठिनाइयाँ उत्पन्न करती है, कारण कि हमारे देश में, अशिक्षा, अन्धविश्वास, रूढ़िवादिता एवं उदासीन व्यक्तियों की अधिक संख्या होने के कारण विश्वसनीय और सही सूचनाएँ प्राप्त करने में कठिनाई होती है।

② विशिष्टीकरण की कमी (Lack of specialisation): यह समस्या सामान्यतया अर्द्धविकसित देशों में पैदा होती है। कारण कि यहाँ छोटे-छोटे किसान और मजदूर अपने खाली समय में कोई भी दूसरा व्यवसाय में काम करते हैं। व्यावसायिक विशिष्टीकरण के अभाव के कारण राष्ट्रीय आय का सही अनुमान लगाना कठिन होता है।

③ कुछ विशिष्ट सेवाएँ (A few specific services): इसके तहत कुछ खास विशिष्ट सेवाएँ भी राष्ट्रीय आय की सही माप में बाधा एवं कठिनाइयाँ उत्पन्न करता है। उदाहरण स्वरूप एक शिक्षिका, एक नर्स या इसी प्रकार के दूसरे अन्य क्षेत्रों में जैसे मिशनरी संगठनों द्वारा स्कूल, अस्पताल एवं घर में की सेवा की गणना में कठिनाई उत्पन्न होती कि इन्हें राष्ट्रीय आय में जोड़ा जाय या नहीं।

④ कीमत-स्तर में परिवर्तन (Change in Price Level): [illegible] जब कीमतों में तेजी से परिवर्तन होता रहता है तो ऐसी दशा में यह कठिनाई उत्पन्न हो जाती है। [illegible] राष्ट्रीय आय की तुलना की जाती है तो [illegible] सूचकांक का प्रयोग करना होता है [illegible]

⑤ दोहरी गणना (Double counting): [illegible] उत्पादित [illegible] हो जाता है [illegible] अन्तिम माना जाय [illegible] यह दोहरी हो जाता है [illegible] नहीं हो पाती है। फलस्वरूप कभी-कभी एक ही वस्तु की गणना दो बार हो जाती है [illegible] अर्थात एक ही उत्पादन की एक से अधिक बार गणना [illegible] बार कर लिया जाता है।

⑥ स्व-उपभोग एवं वस्तु विनिमय प्रणाली (Self-consumption and Barter [illegible]): भारत जैसे विकासशील देशों में [illegible] उत्पादन [illegible] कठिनाई होती है [illegible] उपभोग हेतु रखते हैं [illegible] गणना नहीं हो पाती है [illegible] वस्तु विनिमय प्रणाली के द्वारा (उत्पादन का आदान-प्रदान) [illegible] ग्रामीण क्षेत्रों में [illegible]